के साथ सुना। बड़े भैया राजकपूर और नर्गिस के फैन थे। उनके गाल पर राजकपूर की तरह निशान था। और अपनी सजधज बनत और चाल-ढाल में मानो राजकपूर की कापी थे। पिता सुरैया पर मरते थे। मां सुरैया के नाम से चिढ़ती थी। लेकिन सुरैया के फोटो को पिता के लिए प्रेम से साफ करती थी। फिल्मों ने घरों में इस तरह कब्जा किया कि घर की संस्कृति बदलने लगी। फिल्मों का प्रभाव जीवन पर छा गया।

मुझे याद है कि एक्टर चाचा रेडियो के कारण गांव के आइकन बन गए थे। उन्हीं की वजह से फौजी भाइयों के लिए जयमाला प्रोग्राम के बहाने हम मशहूर फिल्मी हस्तियों जैसे मीना कुमारी, सोहराब मोदी, राज कुमार, धर्मेंद्र, लता मंगेशकर, आशा भोंसले, शंकर-जयकिशन, ओ पी नैयर, सचिन देव बर्मन, चेतन आनंद, रोशन,मदन मोहन आदि महान कलाकारों का आत्मीय और कला समर्पित मन, उनकी सजीव आवाज़ों के माध्यम से जान सके। फौजी भाइयों के लिए उनके संदेशों को सुनकर हमारी श्रद्धा फौजी भाइयों के लिए आकाश हो गई। फिल्म और फिल्मी गाने न होते तो हम देश और उसकी सरहदों को न जान पाते।

उस जमाने में सिर्फ विविध भारती को ही यह सुविधा थी कि वे फिल्म प्रोड्यूसर्स की विशेष अनुमति से एक बार प्रसारण के लिए फिल्मी गीतों को टेप पर रिकार्ड कर सकें। इन फिल्मी गानों को देश के कोने-कोने तक शार्टवेव से पहुंचाने के लिए उन्हें एक ही समय पर अनेक आकाशवाणी केंद्र प्रसारित-अनुप्रसारित करते थे। और इस प्रसारण से घरों के चलते हुए काम रुक जाते थे। यात्रा पर निकले लोग रुक-रुक कर और किसी रेडियोवाले को खोजकर घेर लेते थे। बिनाका गीतमाला और जयमाला की वही प्रतिष्ठा थी, जो दूसरे और बड़े रूप में रामायण या महाभारत को प्राप्त हुई।

विविध भारती इतना लोकप्रिय चैनल था कि अलक्षित दबावों के कारण 1958 में इसे दिल्ली में शिफ्ट करना पड़ा। लेकिन फिल्मी दुनिया तो बंबई में थी और बालीवुड को हासिल करना है तो बंबई ही उपयुक्त जगह थी। सो 1972 में विविध भारती पुनः बंबई के हवाले हो गई। इसके पहले 1967 में विज्ञापन प्रसारण सेवा की शुरुआत हुई। पहले कार्यक्रमों के साथ कमर्शियल स्पाट और जिंगल प्रसारित हुए बाद में 3 मई 1970 को दोपहर साढ़े 12 बजे विज्ञापन प्रसारण सेवा पर पहला प्रायोजित कार्यक्रम प्रसारित हुआ- सेरीडान के साथी। इसमें मशहूर फिल्मी सितारे अपने साथी और कलाकारों के बारे में दिलचस्प बातें, किस्से और प्रसंग साझा करते थे। इस कार्यक्रम की पहली मेहमान थी सिमी ग्रेवाल। उसी दोपहर 12.45 मिनट पर कोहिनूर मिल्स द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम कोहिनूर गीत-गुंजार प्रसारित हुआ। इसके कंपीयर थे पंडित विनोद शर्मा। विविध भारती पर सबसे लंबे समय तक चलने वाला सुपरहिट कार्यक्रम था- सेंटाजन की महफिल। एक्टर चाचा के एनसाइक्लोपीडिया ने बताया, इस कार्यक्रम से कई नाम जुड़े जो श्रोताओं में मशहूर हुए। वे नाम थे- सईदुल हसन, अजय कश्मीरी, मोना अल्वी, रमेश तिवारी, मुजफ्फर कादरी, विजय वर्मा और वी सूरी। इसी प्रोग्राम में उन्होंने पहली बार टुनटुन और मोहन चोटी को सुना। चाचा के फिल्मी ज्ञान का ट्रांसफर कब मेरे भीतर हुआ पता नहीं, लेकिन भीतरी सतहों पर वह इतना प्रभावी था कि मैं कहीं रेडियो में नौकरी के बारे में सपने देखने लगा।

विविध भारती पर पहला फिल्मी स्पाट कब, क्यूं और कहां फिल्म का था। इसे पेश करते थे संयुक्त रूप से विजय बहल, मधुर भूषण और बृजभूषण, प्रायोजित कार्यक्रम चेरी ब्लासम नोंकझोंक में। फिल्मी स्पाट और कार्यक्रम में नोंक-झोंक को श्रोताओं ने खूब पसंद किया। जैसे-जैसे आकाशवाणी के केंद्र देश में बढ़ते गए, फिल्मी गाने और उससे जुड़े कार्यक्रम श्रोताओं तक पहुंचते गए और फिल्मों को बिना प्रमोशन के प्रचार मिलता गया। अगर आकाशवाणी न होती तो फिल्म इंडस्ट्री का जो विकास हम देख रहे हैं वह इतना न हुआ होता।

पचास के दशक के बाद आकाशवाणी के जितने केंद्र खुलते गए, फिल्मी गानों के अनेक कार्यक्रम शुरु हुए। इस तरह हिन्दी फिल्मों के साथ ही क्षेत्रीय सिनेमा को भी बड़ा फलक मिला। हर राज्य में अपनी भाषाओं या हिन्दी के माध्यम से फिल्मी गीत और उन पर आधारित कार्यक्रमों की शुरुआत हुई। जहां कहीं फिल्मी सितारे पहुंचते थे, वे आकाशवाणी के माध्यम से श्रोताओं को संबोधित करते, जो अंततः फिल्मों के दर्शकों में तब्दील हो जाते। इन केंद्रों ने शुरुआत में प्रस्तुति में विविध भारती की शैली को अपनाया और अपने स्तर पर कुछ और आकर्षक तत्व जोड़ दिए। फरमाइशी फिल्मी गानों के प्रोग्राम में चिट्ठियां बोरियों या कई बोरियों में आती। जगह-जगह रेडियो फिल्मी श्रोता क्लब बन गए। उनकी अपनी पहचान बन गई। कहना न होगा कि विविध भारती पर भेजी जाने वाली फरमाइशें अब क्षेत्रीय और स्थानीय केंद्रों पर आने लगीं। यदि इन चिट्ठियों पर केन्द्रित कोई किताब निकले तो हर दौर के गानों की लोकप्रियता को आंका जा सकता है। सिर्फ इतना ही नहीं इन पत्रों में मार्मिक और रोमांटिक बातें भी मिलती हैं। इस तरह बिना टीआरपी के गानों की उस दौर की लोकप्रियता का अंदाजा लगाया जा सकता है। फिल्मी गानों ने लोगों के सुख-दुख में जितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है उसका आकलन मुश्किल है।

जयमाला विशेष जो हफ्ते भर प्रसारित होता था, उसका रविवारीय अंक जयमाला संदेश के नाम से होता था, जिसमें फौजी भाई अपनी बातें, संदेश और सलामती की खबर अपने परिवार वालों तक पहुंचाते थे। कारगिल युद्ध के दौरान विविध भारती ने जो